आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 10/04/2024; Published: 26/06/2024

कविता

अब का होई

- लालजी यादव "झगड़ू भइया"
वाराणसी उत्तरप्रदेश, भारत
09415685764-08858121234

(१)

भइया करिहैं दिने मजूरी रात में साँड़ चरइहैं।
भउजी कार से न चलिहैं रेक्सा से नइहर जइहैं।।
काकी जीरा न छँउकी कक्का बस तेल लगइहैं।
उप्फर परै सिलिंडर फूआ अब चिपरी पथवइहैं।।

सूत के सपना देखत हउँअन इहै सार बहनोई।
बाजी हाथ से निकल गइल कहो फलाने अब का होई।।

(२)

तनिको बेपटरी होबा त फजीहत में पर जइबा।
दाहिने बाॅंए चलबा त फिर सड़क पे जाम बढ़इया।।
बोला अब जिनगी वाली नइया कइसे पार लगइबा।
अच्छी खासी काशी के का फिर करवट करवइबा।।

गदहा का जनिहैं कि लादी कउने घाटे धोई।
गंगाजल त जहर हो गयल कहो फलाने अब का होई।।

(३)

राम क नाम रटै कुचकुचवा सुग्गा करै अजान।
दउरै पूरा महल्ला कउआ लेके भागल कान।।

टेक्नोलॉजी वाली दुलहिन भूल गइल ईमान।
झंखै दादी अपने कुल में का होता हौ भगवान।।

असमय आय बिलरिया रोवै सरल मूस मोर छाती टोई।
शेर बाघ पिजड़ा में हउअन कहो फलाने अब का होई।।

(४)

चिरई जहाँ न उड़ पाई सब अण्डा उहाँ उड़ाई।
बोला अइसन झूठ क घोड़ा के सरपट दउड़ाई।।
केकरे पर विश्वास करीं सब सिधवन के भोरमाई।
ई बेरोज़गारी,भूखमरी के छाती पर दीया बरवाई।।

बुल्डोजर गरजी झोपड़पट्टी किस्मत पर रोई।
चीन्ह चीन्ह के बदरा बरसी कहो फलाने अब का होई।।

(५)

ऊहै बीस मनावै जेकरे पाल्हा में सब कोई।
बन्द जहाँ मुट्ठी में सूरज ओही शीत घाम कुल होई।
कहै जमाना हाथ में जेकरे हौ अधिकार क लोई।
केतनो छाती पिटबा अपने मन क पूड़ी पोई।।

मुअले पर कंधा देई लोगवा जीयते भर काँटा बोई।
मूड़ी काट के करिहैं बार के रक्षा कहो फलाने अब का होई।।

****